कल्याणी

लेखकः

उपाध्याय मुनि निर्णय सागर

देहरा-तिजारा (अलवर) में

श्री चन्द्रप्रभ भगवान

की

50 वीं प्रकट तिथि

(स्वर्ण जयंति के अवसर)

पर प्रकाशित

प्रस्तुति निर्ग्रंथ ग्रंथ माला समिति(रजि0) दिल्ली

पुण्यार्जन श्रावक

श्रीमती सीता जैन

सेवा निवृत्त, उपप्रधानाचार्य

धर्म पत्नी सुरेश चन्द्र जैन सौंगाड़ी

शांतिकुंज अलवर (राज0)

के सौजन्य से 1108

प्रतियाँ प्रकाशित

कृतिः कल्याणी

शुभाशीषः प. पू.राष्ट्र संत, सिद्धांत चक्रवर्ती दि0 जैनाचार्य
श्री 108 विद्यानंद जी महाराज.

लेखकः प. पू. उपाध्याय श्री निर्णय सागर जी महाराज

संपादनः छु0 विशंक सागर

सहयोगीः ऐलक विमुक्त सागर जी एवं संघस्थ सभी त्यागीव्रती

संस्करणः प्रथम संस्करण 2007

प्रतियांः 1108

प्रकाशकः निर्ग्रंथ ग्रंथ माला समिति (रजि0)
कार्यालय कृष्णा नगर दिल्ली

कवर सज्जाः सचिन जैन (निकुंज) 9219172484

प्राप्ति स्थानः श्री निर्ग्रंथ ग्रंथ माला समिति (रजि0)
शाखाः श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर
ऋषभदेव नगर-टूण्डला चौराहा
टूण्डला फिरोजाबाद (उ0प्र0)

दो शब्द

छुल्लक विशंक सागर

'भावों को व्यक्त करने के लिए भारतीय साहित्य में अनेक विधाऐ है। गद्य, पद्य, एकाकी, कहानी,प्रश्नोत्तरी,खण्ड काव्य, प्रकीर्णम छंद। इनमें पद्य की संयोजना अपने आप में सर्वोपरि हैं। शब्दों की पोषाक पहनाकर एवं अलंकारों से अलंकृत कर जब पद्यों के अन्तस्तल में उतारा जाता हैं तव वे पद्य सत्य से साक्षात्कार कराने में समर्थ कारण होते हैं। गद्य को यदि दाल -रोटी वत् सामान्य भोजन कहैं तव पद्य व्यंजनो के समान हैं। गद्य यदि बबूल और आम की लकड़ी हैं। तो पद्य चन्दन की लकड़ी के समान हैं। गद्य यदि सामान्य पाषाण-खण्ड हैं तो पद्य कोहिनूर हीरे के समान हैं गद्य जन सामान्य की तरह हैं तो पद्य इन्द्र व शचि की तरह आर्कषक व श्रेष्ठ होते हैं, गद्य सामान्य जलाशय के समान हैं तव पद्य सतत वाहिनी व समादरणीय भागीरथी के समान है। गद्य को यदि जंगली जानवर की उपमा दें तब पद्य सुन्दर-चिताकर्षक मयूर के समान होते हैं। इनके गुन-गुनाने से अंतस की वीणा के तार झंकृत होते हैं। ये पद्य अंतरंग प्राणों में उर्जाशक्ति का संचय करने वाले होते हैं। वर्तमान उदासीनता के निराश,व हताश युग में एक औषधि की तरह कारगर हैं। ये पद्य संगीत साहित्य की फलश्रुति के मर्धुरम अंगूर हैं, ये सर्वत्र रस प्रदायी, संक्लेशहारी,उत्साह व उर्जा शक्ति के संप्रेरक हैं। प्रस्तुत "कल्याणी" नामक काव्य कृति मोदक की तरह से सुखद व आनंद प्रदायी है,इस कृति में में परम पूज्य गुरुदेव उपाध्याय रत्न श्री निर्णय सागर जी महाराज ने आगम,अध्यात्म,सिद्धान्त,चलानुयोग,रीति-रिवाज, सामाजिक नीतियॉ व मानवीय कर्तव्यों की जो सरल पद्य में कारक भी हैं वह केवल पठनीय ही नहीं स्मरणीय भी हैं। यह काव्य कृति आवाल व्रद्धों को मिश्री की डली की तरह आनंद प्रदायी स्रोतिनी व इन्दु रश्मियों की तरह शांति रुपक हैं। प्रत्येक काव्य के अंत में "कल्याणी" भिन्न-भिन्न अर्थों का प्रतीक हैं। इस काव्य को पढने से पूज्य उपाध्याय श्री के ज्ञान का तो एहसास होता ही हैं साथ ही उन जैसी चर्या करने की भी प्रेरणा प्राप्त होती हैं। परम पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री निर्णय सागर जी महाराज चर्या के धनी युवा मनीषी,एक परम तपस्वी संत हैं उनकी जीवन शैली स्वतः प्रमाणिक चैतन्य ग्रंथ के समान हैं। उनकी सहजोनूम्पा से प्रस्तुत ग्रंथ का एक ही दिन रात में सृजन हुआ हैं। इसमें हरवर्ग के व्यक्ति के लिए उसकी योग्यतानूसार ग्राह हैं। इस कृति के संपादन का कार्य मैंने अपनी अलप वुद्धि से किया हैं।, विज्ञजन इस कृति रुपी सागर में से आत्महितार्थ जितने रत्न ग्रहण कर सकें मेरे तृटि रूपी खारे पानी को छोड़ दें क्योंकि ये तो अतृप्त प्यास है जिसका समन सागर के पानी से सम्भव नहीं है। अंत में परम पूज्य निज आराध्य गुरूदेव उपाध्याय श्री निर्णय सागर जी महाराज के परम पावन चरणों में अपने अंतस की समग्र श्रद्धा और भक्ति से नमोस्तु करता हुआ अपनी. लेखनी को विराम देता हूँ।

'सर्वेषा शान्तिर्भवतु'

३ फरवरी २००७
शांती कुंज अलवर (राज.)

कल्याणी

1.

जिन वचनों से गुंफित है ये, सार भूत शुभ जिनवाणी।
गणधर गण से संग्रहीत है, पावन तीर्थंकर वाणी।।
मुनि पाठक सूरि विरचित है, दिव्य सरस्वती जगमाता।
भवि जन को भव पार उतारे, ये है जग की कल्याणी।।1।।

2.

जिन वचनामृत को पीकर के, होंय तृप्त जग के प्राणी।
भवाताप को हरने वाली, अनाद्यनंत ये जिनवाणी।।
शिव सुख करनी, भव दुख हरनी, जग की माता कहलाती।
इसीलिए तो कहलाती है, भवि जन की ये कल्याणी।।2।।

3.

मुझको प्राणों से भी प्यारी, चेतन वीणा की वाणी।
तुझे बजा कर तुझे सजाकर, होते चिन्मय भविप्राणी।।
मेरे आत्म प्रदेशों में रम, ज्ञान प्रकाश भरो उर में।
चैतन्य क्षितिज में प्रकटो मैय्या, हो जाओ तुम कल्याणी।।3।।

कल्याणी

4.

भाव भासना तेरे द्वारा, कर पाते हैं जग प्राणी।
आत्म साधना भी इससे ही, करते हैं बुध जन ज्ञानी।।
बिना तुम्हें पाये ओ मैय्या, प्राणी जग में भटके हैं।
अपना आश्रय देती सबको, तुम हो सच्ची कल्याणी।।4।।

5.

लोकालोक प्रकाशित करते, बन जाते केवल ज्ञानी।
मति श्रुत अवधि मनः पर्यय की, नहीं रहें कुछ भी शानी।।
अज्ञान तिमिर को सकल हनन करि, ज्ञान भानु उदित होवे।
हे जगमाता कृपा दृष्टि हो, हे जग'जन की कल्याणी।।5।।

6.

जो श्रावक तुम को पा जाता, बनता पूजक वा दानी।
श्रमण राज तुमको पाकर फिर, यम तप से बनते ध्यानी।।
बिना तुम्हारे भव वन में, कल्याण मार्ग क्यों दिख सकता।
सारे जग को जग मग करती, विश्व रूप तुम कल्याणी।।6।।

7.

अक्षर–अक्षर श्रुत बिन्दु पी, भवि जन तब बनते ज्ञानी।
निजात्म रूप बिन जाने–माने, कहलाते सब अज्ञानी।।
जीव देह का भेद बताकर, आत्म निधि को प्रकटाती।
इसीलिए तो बुध जन गण में, कहालाती हो कल्याणी।।7।।

8.

अखिल विश्व में तेरी छाया, फैल रही है हे वाणी।
अबोध, असंयम् मोह विदारक, हे वरदे तेरी वाणी।।
बिन तेरे तो ऋषि, यति, मुनि भी, मूढ़, धूर्त ही कहलाते।
तुझको पाकर स्वपर हितेशी, बन जाते हे कल्याणी।।8।।

9.

सर्व तत्त्व में हो निशंक जन, ज्यों कृपाण पर हो पानी।
विधि रिपु छेदक दुःखविदारक, ज्यों तिलहन को हो घानी।।
जीव देह जुदा है ऐसे, ज्यूँ म्यान से खड़ग रहे।
कर्म मेरु को रज सम करती, हे मैय्या जग कल्याणी।।9।।

कल्याणी

10

हे माता तुमने दर्शया, राग–द्वेष दुश्मन जानी।
इनके चुंगल में फँस करके, निज कुल जाति न पहचानी।।
अज्ञानी बन अनादि काल से, भटक रहे हैं भव वन में।
तुम हो सच्ची पथ प्रदर्शिका, हे माँ! जग में कल्याणी।।10।।

11

तुमको जान–मान अरु पाकर, तृप्त होंय निश्चय ज्ञानी।
शुद्धातम का निज रस पीते, महाश्रमण यतिवर ज्ञानी।।
भेदाभेद बोधि को पाकर, फिर समाधि को लहते हैं।
शिवपुर सुख भी तव प्रसाद से, पा जाते हे कल्याणी।।11।।

12

नयन हीन ज्यूँ पंथ भ्रष्ट हो, त्यूँ तपस्वी अज्ञानी।
संयम बिन भी हित नहिं निज का, बना फिरे कोरा ज्ञानी।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण ही, शिव का मार्ग कहलाता।
भव वारिधि में पतित जनों को, बतलाती मग कल्याणी।।12।।

कल्याणी

13

क्षण भंगुर जग की पर्यायें, राजा होवे या रानी।
दीन, हीन, अरु, रंक निर्धनी, या उदार दाता दानी।।
पुण्य–पाप के पुष्प मनोहर, सुख–दुःख फल दे जाते हैं।
पुण्य–पाप से रहितावस्था, देती तू जग कल्याणी।।13।।

14

निज में निज की निज निधि पाऊँ, ऐसा वर दो वरदानी।
पर विभाव पर पद विकार सब, तजू बनूँ मैं सुज्ञानी।।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नाशकर, निज स्वभाव को प्रकटालूँ।
हे वरदानी, हे जिनवाणी, मम् चित्त विराजो कल्याणी।।14।।

15.

राग–द्वेष के वश हो–हो कर, हित कर मानें जन वाणी।
कोई मोहासक्त दंभ वश, कहे श्रेष्ठ निज की वाणी।।
किन्तु सुधी जन जिनवाणी को, भवदधि तारक नाव कहें।
मोक्ष महल में वास करें वे, वाणी जिन की कल्याणी।।15।।

कल्याणी

16

क्यों अचेत पड़ा भव–वन में, रे मूढ़ मोही प्राणी।
नींद छोड़ उठ जाग खड़ा हो, जगा रही है जिनवाणी।।
अनादि काल से भवागर्त में पड़े, हुए थे वे भी जीव।
आज विराजे सिद्धालय में, तव प्रसाद से कल्याणी।।16।।

17

चलने ही चलने में तूने, समय बिताया है प्राणी।
फिर भी मंजिल पा न सका तू, भ्रमित हुआ सुन जनवाणी।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से, ही मंजिल पा सकता है।
मिथ्या मति से भव दधि से, न तिर पाते हैं कल्याणी।।17।।

18

सर्वज्ञ देव के सर्वांगों से, निःसृत होती जो वाणी।
प्यासे चातक वत् हो पीवें, उस अमृत को जो प्राणी।।
आधि, व्याधि, भवताप मिटाती, निज आतम शीतल करती।
जिनवच में जो निशदिन रमते, वे भी होते कल्याणी।।18।।

कल्याणी

19

तीव्र पिपासा जाग रही हो, पीने को जिनवर वाणी।
सद्गुरु के चरणों में बरसे, ज्ञानामृत झर–झर वाणी।।
अंग–अंग चेतन सब भीगे, पाप पंक विगलित होते।
प्रतिक्रमण की झाड़ू लेकर, मन शुद्ध होय मम कल्याणी।।19।।

20

नयनों में जिनरूप बसा कर, मन सरोज में जिनवाणी।
तनचर्या में दिगम्बरत्व को, बसा रहे हैं जो प्राणी।।
वचनों से गुरु गुणोत्कीर्तन, निशदिन जो करते रहते।
निज स्वभाव में रमने के, फिर पात्र बनें वे कल्याणी।।20।।

21

सप्त भंग मय, सात स्वरों की, सप्तम तत्त्व प्रदा वाणी।
सात शील, सप्तम गुण थानक, निर्भय सप्त बने प्राणी।।
सप्तम पद, सप्तम पृथ्वी तज, सप्तम भूमि चढ़ें ऊपर।
सिद्धालय में निरालम्ब बन, होते जग के कल्याणी।।21।।

22

जलदि बीच सम मन पयोधि में, मल हारक है जिनवाणी।
स्याद्वाद मथनी से मथ करि, नवनीत प्राप्त करते प्राणी।।
आत्म को परमात्म बनाने निश दिन, चित् रत रहते जो।
उनको सिद्ध दशा देने में, होती सहायक कल्याणी।।22।।

23

प्रकृति का हर अंश सदा ही, प्रकृति रूप बोले वाणी।
प्रकृत रूप धरि लीन स्वरूप में, हो जाते हैं जो प्राणी।।
तजकर अकृत, विकृत, सुकृत, कृत्य–कृत्य फिर बन जाते।
निकल ज्ञान कल, सुफल सार फल, पाते हैं वे कल्याणी।।23।।

24

प्राणी मात्र के प्रति मैत्री जो, उर में रखते भवि प्राणी।
दीन–दुःखी प्रति करुणा करके, गुणरागी हो गुरुवाणी।।
प्रतिकूल मार्ग के पंथी के प्रति, माध्ययस्थ भाव जो रखता है।
फिर–निज आतम् को वह लखता, पाकर तुझको कल्याणी।।24।।

कल्याणी

25

सम्यक् दृष्टि, पूर्ण संयमी, होवे जो निश्चय ज्ञानी।
क्रोध लोभ माया का त्यागी, और न होवे जो मानी।।
विषय–भोग का त्यागी, रागी, धर्म ध्यान में लीन रहे।
वह कल्याण मार्ग का नेता, बन जाता है कल्याणी।।25।।

26

शंका, कांक्षा रहित विचिकित्सा, अमूढ़ दृष्टि युत हो प्राणी।
उपगूहन करे थिर कर पद में, वात्सल्य भाव युत हो प्राणी।।
धर्म प्रभावना में ही जिसका, सारा जीवन बीत रहा।
सम्यक् दृष्टि वही कहा है, मोक्ष मार्ग रत कल्याणी।।26।।

27

वसुमद षट् अनायतन, सप्त भय, तीन मूढ़ता रे प्राणी।
ये पच्चीस दोष दृष्टि के, त्याग करो, कहे जिनवाणी।।
वसु गुण अरु चतु लक्षण युत हो, अंग आठ भी नित्य धरे।
ऐसा सम्यक्त्वी नर जग में, बन जाता है कल्याणी।।27।।

कल्याणी

28

अध्रुव, अशरण, एकत्व, भवोदधि, चिंतन जो करते प्राणी।
अन्यत्व, अशुचि, आश्रव, संवर को, निर्जर करते हैं प्राणी।।
लोक, बोधि अरु धर्म भावना, निशदिन जो भाते रहते।
तत्त्व वेता, आत्म चिंतक, भव तिरते हैं कल्याणी।।28।।

29

उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच सत्य बोले वाणी।
संयम, तप शुभ त्याग अकिंचन, ब्रह्मचर्य पाले प्राणी।।
आतम में वृष दश प्रकटाकर, पान स्वात्म रस करते हैं।
निर्णय चढ़ि सोपान धर्म दश, हो जावेगा कल्याणी।।29।।

30

परम अहिंसा सत्य, धर्म गहि, व्रत अचौर्य पाले प्राणी।
ब्रह्मलीन हो, त्यागि परिग्रह, अघ तज कहती गुरुवाणी।।
पाँच महाव्रत करण योग से, जो भी नित पालन करता।
पंचम गति में जाने का वह, काबिल होता कल्याणी।।30।।

कल्याणी

31

ईर्या भाषा समिति ऐषणा, ग्रहण त्याग करते प्राणी।
उत्सर्ग समिति पाँचवीं पाली, शुद्ध दशा में हे प्राणी।।
नूतन कर्म बन्ध से बचकर, संयम संवर पा लेता।
मन, वचन, काय गुप्ति भी पाले, वह शिव भाजक कल्याणी।।31।।

32

श्रावक के गुण आठ कहे हैं, व्रत बारह कहती जिनवाणी।
छह आवश्यक ग्यारह प्रतिमा, नित्य बताती गुरु वाणी।।
नियम सत्रह त्रेपन क्रिया, सम्यक् श्रद्धा से पाले।
ऐसा वीर विवेकी श्रावक, है परम्परा से कल्याणी।।32।।

33

पाँच महाव्रत पाँच समितियाँ, तीन गुप्ति पाले प्राणी।
पंच गुरु की नुति करके फिर षट्, आवश्यक पाले ज्ञानी।।
अःसहि, निःसहि युत सब क्रिया, साम्य भाव से करते हैं।
निश्चित मुक्ति रमा को वरतें, पाते हैं वे कल्याणी।।33।।

कल्याणी

34

विषय, कषाय, आरम्भ, परिग्रह, रहित सदा हो, जो प्राणी।
ज्ञान, ध्यान, तप लीन निरन्तर, कहती है जो गुरुवाणी।।
सूरी, पाठक सभी मुनिश्वर, कर्म गहन का दहन करें।
मुक्ति रमा को वरने वाले, बन जाते फिर कल्याणी।।34।।

35

ग्रन्थ, अर्थ, उभय, परिपूरण, काल, विनय धारे प्राणी।
उपधान, अनिन्हव, मान धरे बहु, सुनकर जो गुरु की वाणी।।
अज्ञान तिमिर का नाश करे, लखि ज्ञान सूर्य के दर्शन से।
ऐसे आतमज्ञानी सम्यक्, बनें केवली कल्याणी।।35।।

36

विपरीत, एकान्त, विनय, संशय, अज्ञान मोह छोड़े प्राणी।
उपशम, वेदक, क्षायिक दृष्टि, पा जाते है सुज्ञानी।।
मिथ्या अविरति, कषाय, योग तजि, पूर्ण ज्ञान दृष्टि पाने।
उनको फिर जिनवर की वाणी, हो जाती है कल्याणी।।36।।

37

नव पदार्थ षट् द्रव्य बताती, सप्त तत्व को जिनवाणी।
जिसको पढ़कर, सुनकर, गाकर, तिर जाते हैं भविप्राणी।।
जो जाने अरु माने ध्याता, अक्षय पद को पाता है।
अरु अन्त में पद अनंत लहि, हो जाता खुद कल्याणी।।37।।

38

चार, पाँच, छह, सात, आठ, नो, दस प्राणों से जीते प्राणी।
निश्चय से तो प्राण ज्ञान दृग, बतलाती है जिनवाणी।।
बिन प्राणों का जीव जगत में, हुआ कभी नहीं होवेगा।
प्राणातिक्रांत वह होता निश्चित, सिद्धालय में कल्याणी।।38।।

39

पूर्व सातिशय पुण्य उदय से, भविजन सुनते जिनवाणी।
उत्तरोतर पुण्य है दुर्लभ, जो गहि लेते जिनवाणी।।
जिनवाणी का सार चित्त में, जिसके जब आ जाता है।
सब सारों का सार स्वयं ही, पा जाता वह कल्याणी।।39।।

कल्याणी

40

काम रोग के रोगी को भी, काम धुरा सम है वाणी।
भव के भोगी योगी को भी,साम सुरा सम है वाणी।।
वियोगी और नियोगी जन को, सुख साता की दाता है।
योगसहित वा योग रहित को, बन जाती है कल्याणी।।40।।

41

नहि गरल है, सुधा सरल है, विष घातक है जिनवाणी।
ईर्ष्या, द्वेष, मात्सर्य, वितृष्णा, हरती क्षण में गुरु वाणी।।
यै भी त्याग, वात्सल्य, दया, निधि, क्षमा, शान्ति सुख की जननी।
हित मित्र, मधुर, समरसी प्याला, होती है ये कल्याणी।।41।।

42

ब्रह्म, भारती, शारद, वरदा, कहूँ सरस्वती जिनवाणी।
माता, ब्राह्मी, ब्रह्म कुमारी, हंस गामिनी–प्रभु वाणी।।
वागीश्वरी, भाषा, जननी, श्रुत देवी ये कहलाती।
वाग्वादिनी, जिनध्वनि जग में, कहलाती है कल्याणी।।42।।

कल्याणी

43

भव मग वक्ता, ग्रन्थ बहुत हैं, शिवमग कहती जिनवाणी।
भव–भव में दुःख की कारण हैं, बाण समां दुर्जन वाणी।।
सदगुरु वाणी सुख की कारण, अन्तर में आलोक भरे।
निज आतम में ज्ञान किरण दे, हे माँ जग की कल्याणी।।43।।

44

भेद–भाव दीवाल मिटाती, प्रेम बढ़ाती जिनवाणी।
मनः क्लेश, अघ ताप मिटावे, हृदय बसे गर गुरु वाणी।।
नफरत की काली छाया को, पल–भर में ही हरती है।
दया, क्षमा, करुणा, समता के, दीप जलाती कल्याणी।।44।।

45

जाति–पाँति मद ऊच–नीच का, दम्भ मिटाती जिनवाणी।
मानवता भी जिसको पाकर, हो जाती फिर मर्दानी।।
हिंसा, झूठ, कुशील, परिग्रह, चौर्य भाव का त्याग करे।
व्रत, समिति, गुप्ति पालन कर, सिद्ध बनावे कल्याणी।।45।।

कल्याणी

46

अतृप्त सदा ही बना रहे जो, पीने को नित जिनवाणी।
निज–पर उर में घोले मिश्री, अमृत सी बोले वाणी।।
अन्तर ग्रन्थि खोल–खोल कर, मुक्ति मार्ग प्रदाता है।
रग–रग रोम–रोम में निवसो, हे माँ मेरी कल्याणी।।46।।

47

समवशरण में यक्ष देव गण, बुला रहे सुनि जिनवाणी।
दिव्य ध्वनि के विरह काल में, समझाते गुरुवर ज्ञानी।।
और पिये जा और लिये जा, घटने का कुछ काम नहीं है।
ये शाश्वत अक्षय निधि है, कल्याण करें नित कल्याणी।।47।।

48

राज्य लक्ष्मी उन पद रहती, सुनते हैं जो जिनवाणी।
तीन लोक की निधि मिलती है, हृदय बसाले गुरुवाणी।।
जिनमुनि की क्रिया चर्या ही, मम् हृदय कमल पर वास करें।
आतम रस का पान करावें, जगत पूज्य ये कल्याणी।।48।।

49

प्राण भले ही मिट–मिट जावें, तदपि मरे ना यह प्राणी।
निश्चय प्राण कभी नहीं मिटते, कहती है यह जिनवाणी।।
निश्चय और व्यवहार जगत में, जीने को दो आलंबन।
जिन श्रुत, मुनि पद पंकज पाकर, सुनो वैन नित कल्याणी।।49।।

50

युग परिवर्तन, जग परिवर्तन, द्रव्य भाव बदले प्राणी।
देव, मनुज, तिर्यंच, नरक गति, बदलें विधि से जग प्राणी।।
द्रव्य दृष्टि से द्रव्य न बदलें, नहिं पर्याय दृष्टि से थिर कोई।
नित्यानित्य द्रव्य सब जानो, जिन वैन यही है कल्याणी।।50।।

51

जर–जर जरा, निर्जरा जीवित, सुखी रहें यतिवर ज्ञानी।
संयम–संवर, ध्यान निर्जरा, तप युत धारें खलु ज्ञानी।।
भेदा–भेद रतनत्रय धारी, मुनिगण पक्षोभय रखते।
सर्वज्ञ जिनेश्वर ने भाखी जो, वही वाणी है कल्याणी।।51।।

कल्याणी

52

जिस नर ने निज स्वत्व न जाना, वह नर जग में अज्ञानी।
जो पर को निज रूप मानता, वह नर मूढ़ महा मानी।।
स्व–पर भेद विज्ञान ज्योति से, निज स्वरूप को पाकर के।
लीन रहें नित आतम में यदि, कहलाते जग कल्याणी।।52।।

53

गृह कलह से परिवार, राजगण, मिटे राष्ट्र बन अज्ञानी।
घर का भेदी लंका ढाहे, बात नहीं जिन ने मानी।।
प्रेम, क्षमा, उपकार, दया की, नींव रसातल तक रहती।
सूत्र वाक्य को चित्त धरे नर, बन जाते वे कल्याणी।।53।।

54

जहाँ कभी था शक्र सा वैभव, चक्री सम राजा–रानी।
जिनके अतुल पराक्रम का भी, था नहीं कोई शानी।।
अहंकार वश रजवाड़ों के, नाम निशान मिटे जग से।
विनय मोक्ष का द्वार भविक जन, बतलाती है कल्याणी।।54।।

कल्याणी

55

पाप तीव्र जब आये उदय में, याद आयेगी तब नानी।
पुण्य उदय में मत इतराओं, बात नहीं उन ने मानी।।
पुण्य–पाप में रख सम दृष्टि, भव–दधि यति वर तिर जाते।
पुण्य–पाप पुद्गल पार्यायें, यही सिखाती कल्याणी।।55।।

56

होय तीव्र मिथ्यात्व उदय में, रुचे नहिं तब जिनवाणी।
कषाय भाव के अत्युदय में, नहिं सुने वह गुरु वाणी।।
दुर्जन, दुष्कृत, दुरा–राधना, जिनके मन को भाती है।
धर्मामृत के मधुर बिन्दु वे, पी नहीं पाते कल्याणी।।56।।

57

क्षण भर सुखाभास दे पाते, इष्ट गंध रस दृग वाणी।
शाश्वत सुख की जननी सम्यक्, वीतराग जिन की वाणी।।
इसे प्राप्त कर भविजन सम्मुख, हाथ नहीं फैलायेगा।
शाश्वत दाता बन जायेगा, पाकर निज में कल्याणी।।57।।

कल्याणी

58

ऋषि, मुनि, अनगार, यतीश्वर, योगी, संत, महाज्ञानी।
साधक, सूरि, दांत भदंत जन, व्रती, संयमी, निज ज्ञानी।।
दमी, यमी, साधक, संयत भी, तभी सुजन मन बन पाते।
देव, महात्मा, गुरु, दयालु, जब जब आते कल्याणी।।58।।

59

वाणी भी तब तक वीणा है, जब तक उर में जिनवाणी।
वाण समा वह हृदय विदारक, परुष निंद्य है अघ वाणी।।
हित, मित, प्रिय, मोहतम हारक, जिन वच रश्मि पाकर के।
गुरु से भी गुरुतर बन जावें, गर पा जावें वे कल्याणी।।59।।

60

समस्त मंगलों की जो माता, कर्म विनाशक जिनवाणी।
मोह विदारक, मोक्ष विधायक, तिमिर घातिनी गुरुवाणी।।
हरित, सुमोद, सदा सुख दायी, वसुधा भी फिर हो जाती।
जहाँ जिनेन्द्र की दिव्य ध्वनि, खिरती जग में कल्याणी।।60।।

कल्याणी

61

शतक इन्द्र भी जिसको पाने, तरसें वह है, जिनवाणी।
जिसे प्राप्त कर, हो निहाल वे, तिर जाते भविदधि प्राणी।।
जिससे चेतन में आत्म ध्यान का, शाश्वत दीपक जलता है।
वही आत्मा अखिल विश्व में, कहलाती है कल्याणी।।61।।

62

जिनादित्य जिसके उत्पादक, संग्राहक गणधर ज्ञानी।
मुनि जन सदुपयोग बता कर, बाँट रहे हैं जिनवाणी।।
प्रकृति के हर अंश मात्र में, जिसकी सत्ता शाश्वत है।
स्वाति बूँद सम चातक बन मैं, पी जाऊँ वृष कल्याणी।।62।।

63

हटा मोह की चादर जिसने, तोड़ी निद्रा अभिमानी।
आत्म ज्ञान का सुधा सिंधु पी, जान गया निज जिन्दगानी।।
संयम गहि जो मोक्ष मार्ग में, अविरल आगे बढ़ता है।
नन्तकाल तक शाश्वत निधि को, पाता है वह कल्याणी।।63।।

64

निर्मोही को निज वाणी भी, बन जाती है जिनवाणी।
और संयमी यतिजनों की, वाणी ही है गुरुवाणी।।
निश्चय तीन रत्न को जिसने, निज में ही प्रकटाया है।
हर वाणी, हर राह, कार्य सब, होते उसके कल्याणी।।64।।

65

नवरस में भी आतमरस को, पा जाते सुनि जिनवाणी।
हर अक्षर अनुस्वार व्यंजन, बन जाता है गुरुवाणी।।
हर वाणी में दिखे शुद्ध शिव, निज शुद्धातम को लख कर।
चखने वाला हर काल क्षेत्र में, निज रस पाता कल्याणी।।65।।

66

दिशा वसन, नभ चादर, शय्या, बना भूमि वे मुनि ज्ञानी।
पात्र पाणि, अरु–तरु तल आसन, सहैं परिषह निज ध्यानी।।
अति अगाध समरसी सिंधु में, पुनि–पुनि डूब–डूब जाते।
भव, तन, भोग विरागी, मुनिजन, कहलाते जग कल्याणी।।66।।

कल्याणी

67

जिन–जिन अंश–अंश, अणु–अणु से, बनी है शाश्वत श्रुत वाणी।
उन–उन अंश–अंश, कण–कण में, दिखती शाश्वत जिनवाणी।।
चार घातिया कर्म नाशि करि, अरिहन्त कोई भी बन जावे।
दिव्य ध्वनि सबकी वह एक ही, बन जाती जग कल्याणी।।67।।

68

कान बंद कर भी मैं बैठूँ, सुन लेता हूँ जिनवाणी।
आँख बंद कर भी तो मुझको, दिख जाता है हर प्राणी।।
निज आतम को पूर्ण जानकर, नहीं शेष कुछ रहता है।
जिनके हर उपदेश कर्म भी, होते हैं जन कल्याणी।।68।।

69

वसुधा का कण–कण हो पावन, जहाँ खिर जाती जिनवाणी।
निर्ग्रन्थ मुनि के मंगल विहार से, आनंदित होते प्राणी।।
गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, मोक्ष भी, कल्याणक फिर बन जाते।
षोड़श कारण भावन भा कर, बनते निज पर कल्याणी।।69।।

कल्याणी

70

चित्रकार के चित्रों में भी, मुझे दिख रही जिनवाणी।
शिल्पकार की मूर्ति कला में, दिखती प्रभुवर की वाणी।।
गायक, वादक, धारक, साधक, उसी रूप में दिखते हैं।
जिनके उर के अंतस्तल में, आन वसी है कल्याणी।।70।।

71

सुप्रभात की अरुण लालिमा, कहे विराग सम जिनवाणी।
सांध्य काल की अरुणा, मोहक, पीकर सोवें जग प्राणी।।
एक सुलावे, एक जगावे, राग–राग में अंतर है।
निज, जिन, गुण धर्मानुराग ही, होता जग में कल्याणी।।71।।

72

तभी उतरती मोहक हाला, सुनता है जब जिनवाणी।
उन्मीलित करते नयनों को, करुणाशील, गुरुवर ज्ञानी।।
इसके बिना नशा मोह का, कभी नहीं कम हो पाता।
पर पदार्थ में लीन रहा जो, क्या करे माँ कल्याणी।।72।।

कल्याणी

73

कूप, सिंधु, गह्वर, झरना, जल, सरिता, झील व घन पानी।
पुष्प, वृक्ष, पादप, दल, पल्लव, अनिलानल की हो वाणी।।
हर परमाणु मात्र में उसको, वही शारदा दिखती है।
जिसके स्वात्म प्रदेश प्रत्येक में, बसी ध्वनि जिन कल्याणी।।73।।

74

कहीं रोक मन्दिर जाने में, तीरथ में रोके प्राणी।
गुरुद्वारा और गिरजाघर में, नहिं सभी की अगवानी।।
सदाचार, संयम, तप पालै, श्रद्धा, भक्ति, समर्पण से।
भेद–भाव से रहित सर्वहित, वीर ध्वनि जिन कल्याणी।।74।।

75

मार्ग भ्रष्ट हो भव कानन में, भटक रहे हैं जो प्राणी।
सबको सच्ची राह बताती, शाश्वत हितकर जिनवाणी।।
जिसे प्राप्त कर भव वन में, नहीं भटक कोई पाता।
आपस में मिल प्रेम बढ़ाती, एकमात्र श्रुति कल्याणी।।75।।

76

चाहे भले ही मिले न भोजन, नहिं मिले पीनें पानी।
वसन, सदन न मिले भले ही, नहि श्रवण गम्य हो मधु वाणी।।
ज्यों नीर–क्षीर का भेद बताती, त्यों देह जीव का ज्ञान सखे।
औषधि सम निरोगी बनाती, वरदा माता कल्याणी।।76।।

77

धर्म, पंथ, सम्प्रदाय नाम से, आपस में बँट गये प्राणी।
अपनी–अपनी तान रहे सब, जीव जाति न पहचानी।।
अहंकार वश एक दूजे को, करे पराजित साधक भी।
उसने आत्म शक्ति न जानी, सुनी न वाणी कल्याणी।।77।।

78

जन्म–जात बैरी जंतु भी, तजैं बैर सुनि जिनवाणी।
आपस में सब हिल–मिल रहते, सुनकर जिन गुरु की वाणी।।
सिंह गाय मिल पानी पीते, अहि नकुल खेले संग में।
जहाँ विराजे वीर जिनेश्वर, प्राणी मात्र के कल्याणी।।78।।

79

जीव मात्र की उद्धारक है, महामन्त्र रूप प्रभू की वाणी।
जिसके अक्षर श्रवण मात्र से, मुक्त हुए दुःख से प्राणी।।
चिंतन, वंदन, मनन, जाप, गुनि ध्यान चित्त में जो धरता।
कर्म कालिमा सभी मिटाकर, बने सिद्ध वह कल्याणी।।79।।

80

पर पदार्थ में स्वाद तभी तक, सुनी न जब तक जिनवाणी।
पुद्गल श्रेष्ठ तभी तक भासै, नहिं अनुभवी गुरु वाणी।।
तब तक है सम्मान जगत में, भाषण, नाटक आला का।
निज कर्णों से सुनि न जब तक, वाणी प्रभु की कल्याणी।।80।।

81

आज भले ही सुने न कोई, कल सुननी होगी जिनवाणी।
आज भले ही भव में भटके, कल तिर जावेगा प्राणी।।
आज नहीं तो कल नियम से, मुनि पद को वह धारेगा।
एक बार भी निज स्वरूप को, लखि लेता जो कल्याणी।।81।।

कल्याणी

82

हर प्राणी में प्राण फूंकती, ब्रह्मरूप यह जिनवाणी।
मुर्दों को मरघट पहुँचाती, नूतन तन देती वाणी।।
अखिल विश्व में दिव्य ज्योति भर, स्व–पर प्रकाशक करती है।
आतम के तम को विनशाती, चिदादित्य जिन कल्याणी।।82।।

83

मुनिगण, ऋषिवर, यति, संतों की, क्षुधा मिटाती जिनवाणी।
जिसे प्राप्त कर पूर्ण तृप्ति को, पा जाते शिव मग प्राणी।।
है अनादि, मध्यान्त रहित ये, शाश्वत स्वभाव की सुख कारक।
हर युग में नई नवेली दिखती, जिनवाणी शुभ कल्याणी।।83।।

84

सकल दुष्ट, दुर्जन मिल नाशैं, तब भी न मिटेगी जिनवाणी।
धर्म, गुरु, जिन वैन नशैं जो, मिट जाते वे ही प्राणी।।
अजर–अमर, निर्मल, अविनाशी, पतित पावनी प्रभू वाणी।
इसको सुने गुने बिन 'निर्णय', बन पाते नहि कल्याणी।।84।।

85

छुआ–छूत और ऊँच–नीच का, करे भेद नहीं जिनवाणी।
निज की पात्रतानुसार ही, ग्रहण करि सके हर प्राणी।।
क्षिति, जल, अग्नि, मरुत, महीज, नभ भेद नहि ये करते हैं।
दुग्ध, अन्न, फल, वृक्ष सम सबको, होती है ये कल्याणी।।85।।

86

भवाताप, संताप, पाप, रिपु, होय शांत सुन जिनवाणी।
द्रव्य, भाव, नोकर्म, विनाशे, जिन वच उर धरि भवि प्राणी।।
लाभ–हानि, जीवन–मृत्यु में, समता भाव जगाती हो।
सर्व पराजय को जय करके, करती अपराजित कल्याणी।।86।।

87

यक्ष देव गण तुम्हें बुलाते, आओ सुन लो जिनवाणी।
अज्ञ–विज्ञ, धनवान–निर्धनी, आत्म भेद नहीं है प्राणी।।
फल तो सभी सिद्ध पद पाते, रत्नत्रय के तरुवर पै।
क्षपक श्रेणि के आरोहक यति, होते तद्भव कल्याणी।।87।।

कल्याणी

88

कल पर कब विश्वास करूँ कहाँ, सुनली मैंने जिनवाणी।
काल कराल सदा तत्पर है, बचे नहिं कोई प्राणी।।
द्रव्य और पर्याय दृष्टि से, नित्य–अनित्य सदा जाने।
तन अनित्य अरु नित्य चेतना, प्राप्त करो बन कल्याणी।।88।।

89

धन, पद, यश, वैभव पाने में, स्पर्धा करता प्राणी।
किन्तु ज्ञान धन, सम्यक् श्रद्धा, व्रत में करता नहीं प्राणी।।
चेतन की निधि लूटो ऐसे, ज्यों रंक निधि को गहता है।
वे निजा–सक्त, विरागी पर से, निर्णय होते कल्याणी।।89।।

90

भौतिक, वैभव, पर धन लूटा, आज लुटाओ जिनवाणी।
लुटता वही जो लूटे जग को, त्यागी शाश्वत हो ज्ञानी।।
अंत न आवे ज्ञान कोश का, दिन–रात लुटाओ दिनकर सम।
ज्ञान बाँटकर नंत जीव को, फिर भी शाश्वत कल्याणी।।90।।

कल्याणी

91

पुण्य उदय से मिला सु अवसर, सुनने को अब जिनवाणी।
पुण्यहीन हैं, बुद्धि हीन हैं, नहिं सुन सकते जो गुरुवाणी।।
मिला ये सुअवसर छोड़ दिया तो, भव–भव में पछताओगे।
करि निर्णय कल्याण स्वयं का, है अन्तिम बेला कल्याणी।।91।।

92

ग्रन्थों की भी ग्रन्थि खोलकर, निर्ग्रन्थ बनावे जिनवाणी।
सब ग्रन्थों का सार यही है, समता चित् धर ले प्राणी।।
बिन समता के ममता में रमि, विषम विषमता सहता है।
ममत्व विषमता, तजि गहि समता, समता ही है कल्याणी।।92।।

93

अल्प काल का नर भव पाकर, क्यों न बने संयत प्राणी।
वय अल्प में बने तपस्वी, चऊ घाति–घाति कर महाज्ञानी।।
विष सम विषय वासना को तज, चिन्मय रत्न गहे जिसने।
पाप गरल तज, मोह पाश नशि, जिन वचन सुधा गहि कल्याणी।।93।।

94

जिन वच सुन, जो बचा न दुःख से, भाग्य हीन, भोगी प्राणी।
व्यर्थ गँवाया नर भव उसने, सुनी न जिसने गुरु वाणी।।
जीने का मकसद क्या जाने, जन्म, जरा, अतंक, रोगी।
तीन लोक का सार सुसंयम, पाता सुनि वच कल्याणी।।94।।

95

खुद का खुदा, खुदी में बैठा, खुद में खुद को लखि प्राणी।
खुद पा परखो, आत्म ध्यान से, सुनकर जिनवर की वाणी।।
खुद की खुदी से हुआ जुदा न, खुदा नहिं बन पायेगा।
खुद को पूर्ण पा लिया जिसने, बना खुदा वह कल्याणी।।95।।

96

सजल मेघ जब वृष्टि करता, होंय तृप्त सबही प्राणी।
वचनामृत की पावन धारा, कर्म पंक धोवे प्राणी।।
बिना सूर्य के जगती तल का, तिमिर अंत क्या हो सकता।
उसी तरह जिन सूर्य रश्मि से, विज्ञ बने जन कल्याणी।।96।।

कल्याणी

97

कर पुरुषार्थ तू बन सकता है, पुरुषोत्तम जग में प्राणी।
अंकित अंक भाल के तू ही, मिटा सके सुन गुरु वाणी।।
भाग्य और पुरुषार्थ जगत में, महत्व समान ही रखते हैं।
फिर भी विधि का जनक, यत्न है, कहती वाणी कल्याणी।।97।।

98

कभी तोष मत तू कर लेना, बहुत सुनी है जिनवाणी।
कभी रोष मत तू वर लेना, अहंकार युत हो प्राणी।।
जोश, रोष, भव कोष हटाकर, आत्म होश जो पायेगा।
दोष, मोह को त्याग तोष धरि, बन जायेगा कल्याणी।।98।।

99

ज्ञान दान करने में करता, क्यों कंजूसी तू प्राणी।
अक्षय कोष ज्ञान, व्रत दृग का, करो दान कहती वाणी।।
चार दान दे अनंत चतुष्टय, तू निश्चित पा जायेगा।
चार गति को नाशि क्षणिक में, बन जायेगा कल्याणी।।99।।

100

मान और अपमान भुलाकर, सुनता है जो जिनवाणी।
आत्म ध्यान कर, ज्ञान--दान दे, दया युक्त होवें प्राणी।।
संयम, तप, व्रत, समिति, गुप्ति से, आत्म शोधन करता है।
शिवशाला का पथिक वही यति, बन जाता है कल्याणी।।100।।

101

क्षीण, क्षुद्र, क्षण भंगुर दुर्बल, सार हीन तन है प्राणी।
ध्रुव, विराट, शाश्वत, सुबल युत, सारभूत गुरु की वाणी।।
चेतन में चेतनता लखि कर, चेत, चित्त को शोधो रे।
नित्य--अनित्य चित्त--तन जानो, बन जाओ फिर कल्याणी।।101।।

102

क्या कहता है? भव सिंधु तिरूँगा, बिना सुने ही जिनवाणी।
रत्नत्रय की बिना साधना, शिव मग चाहता तू प्राणी।।
बात असंभव, अग्नि शीतल, मूर्तिमान नभ हो जाये।
फिर भी जिनवाणी बिन चेतन, बन न सके तू कल्याणी।।102।।

103

यम आयेगा लेने जब तब, काम आयेगी जिनवाणी।
पीड़ा, संकट, कष्ट वेदना, दूर करेगी गुरुवाणी।।
औषधि, पथ्य, परहेज, विटामिन, काम नहीं कुछ आयेंगे।
स्वस्थ हुए बिन स्वस्थ न होता, कहती है ये कल्याणी।।103।।

104

अंत अत्यंत दुःखमय जीवन का, होता सुनकर जिनवाणी।
शाश्वत उदय सुखमय जीवन का होता सुनले गुरुवाणी।।
जिन वचन ज्योति बिन भव कानन में, नंत काल से भटका है।
आज सुपथ शिव पथ को पाले, पाल धर्म तू कल्याणी।।104।।

105

ज्यों उपवन को माली पोषे, त्यों जीवन को जिनवाणी।
ज्यों कुंभ को कुलाल बनाने, त्यों परभव को गुरुवाणी।।
मात–पिता सम रक्षक हैं वे, गुरुवर जग में कहलाते।
देव, शास्त्र, गुरु, पद, रज, पाकर, हो जाते जन कल्याणी।।105।।

106

यम के आने के पहिले ही, यम, संयम गहिले प्राणी।
कण्ठ यदि अवरुद्ध हुआ तो, कह न सकेगा कुछ प्राणी।।
जिन वचनामृत को चेतन तू, अन्त श्वास तक पीते जा।
निर्णय कर ले अंतिम भव में, पाऊँगा अब कल्याणी।।106।।

107

अंत अनंत का हो नहीं चेतन, नहिं मिले नंत आयु प्राणी।
नंत अनंत का अंत करे वह, सुनता है जो जिनवाणी।।
अन्तगति में स्वांत अंत को, अनंत काल तक पा जाऊँ।
चेतन शुद्ध चित्त हो मेरा, वाणी भी हो कल्याणी।।107।।

108

अंत–अंत तक अतिंम स्वर भी, मुख से निकले जिनवाणी।
होश, जोश, अरु रोष–तोष में, कभी न भूलूँ गुरु वाणी।।
अरिहन्त सिद्ध है सत्य जगत में, अरिहन्त सिद्ध बन मैं जानूँ।
दिव्य ध्वनि बन जाये मेरी, प्राणिमात्र की कल्याणी।।108।।

कल्याणी

109

तीर्थंकर मैं होना चाहूँ, पा तीर्थंकर की वाणी।
पंच कल्याणक प्राप्त हमें हों, तिरें भवोदधि भवि प्राणि।।
अंतहीन पद अंत काल में, श्वास आखिरी जब आवें।
तनकारा अरु मुक्ति विधि से, बने श्वास जन कल्याणी।।109।।

110

जीवन मरण सभी शुभ बनता, सुन ले गर तू जिनवाणी।
रत्नत्रय की नाव पकड़ लो, तिरो भवोदधि हे प्राणी।।
जिनवाणी को सुख–दुख में भी, कभी नहीं तू बिसराना।
विश्व शांति विश्राम दिलावें, शाश्वत निज में कल्याणी।।110।।

111

नहिं मौत भी मारे उसको, जिसकी धड़कन में वाणी।
धर्म भाव ही प्राण मुनि का, धर्म बिना मृत है प्राणी।।
तीन लोक में सुख अनंत तू, नहिं मोह नशे बिन पायेगा।
क्षीण मोह जब हो जायेगा, बने सुधी जन कल्याणी।।111।।

112

अनादि काल से भव समुद्र में, डूब रहा है यह प्राणी।
अरे जरा सी करुणा करके, दे दो नौका जिनवाणी।।
अगर नहीं हो ये भी संभव, गुरु नाविक का हाथ पकड़।
भवदधि के तट को पा लेगा, लोक शिखर को कल्याणी।।112।।

113

कभी निराश न होना बंदे, आज नहीं कल सुन वाणी।
अवश्य सफलता तब पद चूमे, मंजिल मग गर जिनवाणी।।
मंजिल पाने भटक रहा क्यों, खुद चलकर आ जायेगी।
अपने सारे कर्म जला ले, बन जा खुद तू कल्याणी।।113।।

114

भाग्यहीन को प्राप्य नहीं है, सुन पावे जो जिनवाणी।
किन्तु नहीं तुम हिम्मत हारों, भाग्य बने सुन गुरु वाणी।।
क्षणभर को भी चेतन तू, गर निज आतम रस पी लेगा।
नन्तकाल को विश्व विजेता, बने जिनेन्द्र तू कल्याणी।।114।।

कल्याणी

115

जग के वैभव मृग तृष्णा सम, लेकिन शाश्वत है वाणी।
जो हैं मोही, रागी, द्वेषी, समझ सकें नहिं वे प्राणी।।
भौतिक वैभव मृगतृष्णा सम, शाश्वत अमृत जिनवाणी।
शून्य समान सकल पदार्थ, चेतन अंक हैं कल्याणी।।115।।

116

धर्म कार्य बढ़ रहे निरन्तर, और जिनालय, जिनवाणी।
बन साधक, श्रावक संयम ले, शिव पथ बढ़ रहे हैं प्राणी।।
तू भी मेरी बात मान कर, एक कदम आगे बढ़ जा।
कल तुझे मिल जाये शिवालय, सम्यक् गति ही कल्याणी।।116।।

117

आज नहीं मैं कल देखूँगा, बनें अहिंसक सब प्राणी।
हिंसादि सब पाप छोड़कर, हो जायें ज्ञानी ध्यानी।।
किन्तु तभी ये सम्भव होगा, जब निज में मैं रम जाऊँगा,
जीव मात्र को सुख शांति प्रदायक, बनें वैन जिन कल्याणी।।117।।

कल्याणी

I

नर तिर्यंच सुरगण भी आते, जिन बंदन को मुनि ज्ञानी।
दूर–दूर से भवि जन आते, सुनने गुरु से जिनवाणी।।
वर्षा योग महासुख दायी, द्वि सहस्र अब्दि के छह ऊपर।
देहरा तिजारा तीर्थ श्रेष्ठ है, जन–जन का भी कल्याणी।।

II

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यानंद गुरुवर ज्ञानी।
रत्नत्रय के संस्कार शुभ, पाठक पद दी जिन्दगानी।।
आज उन्हीं की शुभ अनुकम्पा, दीप ज्योति सम मुझे मिली।
इसलिए तो मम जीवन भी, हुआ आज मम कल्याणी।।

III

दीक्षा दिवस अठारहवाँ है, क्षमा दान दो हे वाणी।
संयम निधि पा कर्म नशावें, जग में सब भवि जन प्राणी।।
सत्ररह अधिक शतक काव्य में, दिवस एक में ही गूंथे।
निज पर का कल्याण सतत् हो, भाव यही मन कल्याणी।।

प. पू. उपाध्याय श्री 108 निर्णय सागर जी महाराज
द्वारा रचित, संपादित एवं निर्ग्रंथ ग्रंथमाला द्वारा प्रकाशित साहित्य

1. निज अवलोकन
2. देशभूषण कुलभूषण चरित्र
3. हमारे आदर्श
4. चित्रसेन पद्मावती चरित्र
5. नंगानंग कुमार चरित्र
6. धर्म रसायण
7. मौनव्रत कथा
8. सुदर्शन चरित्र
9. प्रभंजन चरित्र
10. सुरसुन्दरी चरित्र
11. जिनश्रमण भारती
12. सर्वोदय नैतिक धर्म
13. चारुदत्त चरित्र
14. करकण्डु चरित्र
15. रयणसार
16. नागकुमार चरित्र
17. सीता चरित्र
18. योगामृत भाग-1
19. योगामृत भाग-2
20. आध्यात्मतरंगिणी
21. सप्त व्यसन चरित्र
22. वीर वर्धमान चरित्र भाग-1
23. वीर वर्धमान चरित्र भाग-2
24. भद्रबाहु चरित्र
25. हनुमान चरित्र
26. महापुराण भाग-1
27. महापुराण भाग-2
28. योगसार-भाग-1
29. योगसार-भाग-2
30. भव्य प्रमोद
31. सदार्चन सुमन
32. तत्वार्थ सार
33. कल्याण कारक
34. श्री जम्बूस्वामी चरित्र
35. आराधना सार
36. यशोधर चरित्र
37. व्रतकथा संग्रह
38. तनाव से मुक्ति
39. उपासकाध्ययन भाग -1
40. उपासकाध्ययन भाग -2
41. रामचरित्र भाग-1
42. रामचरित्र भाग-2
43. नीतिसार समुच्चय
44. आराधना कथा कोश भाग-1
45. आराधना कथा कोश भाग-2
46. आराधना कथा कोश भाग-3
47. दशामृत

48. सिन्दूर प्रकरण
49. प्रबोध सार
50. शान्तिनाथपुराण भाग-1
51. शान्तिनाथ पुराण भाग-2
52. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार
53. सम्यक्त्व कौमुदी
54. धर्मामृत भाग-1
55. धर्मामृत भाग-2
56. पुण्य वर्द्धक
57. पुण्यास्रव कथा कोश भाग-1
58. पुण्यास्रव कथा कोश भाग-2
59. चौंतीस स्थान दर्शन
60. अमरसेन चरित्र
61. सार समुच्चय
62. दान के अचिन्त्य प्रभाव
63. पुराण सार संग्रह भाग-1
64. पुराण सार संग्रह भाग-2
65. आहार दान
66. सुलोचना चरित्र
67. गौतम स्वामी चरित्र
68.महीपाल चरित्र
69. जिनदत्त चरित
70. सुभौम चक्रवर्ती चरित्र
71. चेलना चरित्र
72. धन्यकुमार चरित्र
73. सुकुमाल चरित्र
74. कुरल काव्य
75. धर्म संस्कार भाग-1
76. प्रकृति समुत्कीर्तन
77.भगवती आराधना
78. निर्ग्रंथ आराधना
79. निर्ग्रंथ भक्ति
80. कर्मप्रकृति
81. पूजा-अर्चना
82. नौ-निधि
83. पंचरत्न
84. व्रताधीश्वर-रोहिणी व्रत
85. तत्त्वार्थस्य संसिद्धि
86. रत्नकरण्डक श्रावकाचार
87. तत्त्वार्थ सूत्र
88. छहढाला (तत्त्वोपदेश)
89. छत्रचूड़ामणि(जीवंधर चरित्र)
90. धर्म संस्कार भाग-2
91. गागर में सागर
92. स्वाति की बूँद
93. सीप का मोती
(महावीर जयन्ती प्रवचन)
94. भावत्रयफल प्रदर्शी
95. सच्चे सुख का मार्ग
96. तनाव से मुक्ति-भाग-2
97. कर्म विपाक
98. अन्तर्यात्रा
99. सुभाषित रत्न संदोह
100. अरिष्ट निवारक विधान संग्रह
101. पंचपरमेष्ठी विधान
102. श्री शांतिनाथ भक्तामर, सम्मेदशिखर विधान
103. मेरा संदेश
104. धर्म बोध संस्कार 1,2,3,4
105. सप्त अभिशाप
106. दिगम्बरत्वः क्या, क्यों, कैसे?
107. जिनदर्शन से निजदर्शन
108. निशि भोजन त्यागः क्यों?
109. जलगालनः क्या, क्यों, कैसे?
110. धर्मः क्या, क्यों, कैसे?
111. श्री महावीर भक्तामर स्तोत्र